विष्णुधर्मोत्तर पुराण में शिवतत्त्व

नारद पुराण(पूर्वभाग-चतुर्थपाद-अध्याय-94) के अनुसार विष्णु पुराण का द्वितीय भाग विष्णुधर्मोत्तर पुराण कहलाता है। परन्तु बहुत से विद्वान् इसे एक स्वतंत्र उपपुराण के रूप में स्वीकार करते हैं। वर्तमान में उपलब्ध विष्णुधर्मोत्तर पुराण की श्लोकसंख्या लगभग 9000 है। नारद पुराण के अनुसार विष्णु पुराण की कुल श्लोकसंख्या 23000 है। विष्णु धर्मोत्तर एवं विष्णु पुराण दोनों की प्राप्त श्लोकसंख्या कुल 16000 है। अतः सात हजार श्लोकों की कमी है। ये 7000 श्लोक या तो पूर्व भाग के या उत्तर भाग के या दोनों भाग के हो सकते हैं। इस पुराण में कुल तीन खण्ड हैं। नारद पुराण के अनुसार इसमें वराह कल्प के वृत्तांत हैं।

इस पुराण में भगवान् शिव से संबन्धित कथाओं का संदर्भ बहुत ही कम आया है। और जो कुछ आया है उसका वर्णन इतने कम श्लोकों में किया गया है कि उनमें शिव के माहात्म्य को प्रकट होने का अवसर ही नहीं प्राप्त हो सका है जबकि उन्हीं प्रसंगों की अन्य ग्रन्थों की विस्तृत चर्चा में शिव का स्वरूप एवं माहात्म्य खुलकर सामने आया है। उदाहरण के लिये इस पुराण की दक्ष के यज्ञविध्वंस की कथा लें अथवा अंधकासुरवध की, दोनों ही कथाओं का संक्षिप्त वर्णन शिवसंबंधी अनेक तथ्यों की उपेक्षा कर देता है। शिव की कथाओं का विस्तार से वर्णन न करने का एक कारण यह हो सकता है कि यह एक वैष्णव पुराण है जिसका लक्ष्य विष्णु संबंधी कथाओं या उनके माहात्म्य को बल देना है। इतना सब होते हुए भी कुछ प्रसंग ऐसे मिल ही जाते हैं जहाँ हमें भगवान् शिव की गरिमा का ज्ञान होता है।

भगवान् शिव का स्वरूप

पृथ्वीपर दुष्ट क्षत्रियों के उत्पात बढ़ जानेपर धरती के उद्धार हेतु बृहस्पति तथा इन्द्र के साथ ब्रह्माजी भगवान् शंकर के यहाँ निवेदन करने जाते हैं। रुद्रलोक में वे लोग त्रिनेत्रधारी का जिस रूप में दर्शन करते हैं उसके वर्णन में उन्हें जटा-जूटधारी, अग्निपुञ्ज के समान प्रकाशित, सूर्यप्रकाश के समान तीसरे नेत्र से युक्त, मस्तक पर चन्द्रमा धारण किये हुए, नागों का यज्ञोपवीत पहने, नागेश्वर का अंकुश बनाये हुए, नीलकंठ, विशालाक्ष, वर देनेवाले, सभी भूतों के जनक तथा नन्दी के अनुगत सहस्त्रों अनुचरों से घिरे हुए कहा गया है। भगवान् शिव को इस रूप में देख देवगण प्रणाम कर उनकी स्तुति करने लगे(विष्णुधर्मोत्तर पु. प्रथम खण्ड 28/1-5)। स्तुति इन्द्र ने प्रारम्भ की। अपनी स्तुति में इन्द्र शिव को देवदेवेश, दु:ख का विनाश करनेवाले, गंगा सहित जटाओं से सुशोभित, अमित विक्रमवाले, ब्रह्मचारी, सर्वदेवमय, धाता, सभी देवों द्वारा वरणीय, सभी भूतों की बुद्धि, सभी देवों के गुरु, सभी भूतों के ईश्वरों के ईश्वर, महायोगी आदि-आदि कहा है। उनके लिंगार्चन से सभी पापों का नाश हो जाता है। जो लोग उनका सतत स्मरण करते हैं वे परमगति को प्राप्त करते हैं। उनका वाहन चार पादों से युक्त धर्म है। उन्हीं की मूर्तियों से यह जगत् व्याप्त है। इस जगत् में उनके सिवा

कुछ भी आस्तित्व नहीं रखता (विष्णुध. पु. प्र. ख. 28/6-16)

नमोऽस्तुदेवदेवेश प्रणतार्तिविनाशन।
सर्वदेवमयो धाता सर्वदेवमयोऽपि च।
सर्वदेववरेण्यस्त्वं सर्वभूतविभावनः।।
सर्वामरगुरुर्देवः सर्वभूतेश्वरेश्वरः।
मूर्त्तयस्ते स्मृता देव याभिर्व्याप्तमिदं जगत्।।
त्वया विना जगत्यस्मिन्नान्यत्किञ्चन विद्यते।।

(वि. धर्मो. पु. प्रथमख. 28/6, 11-12, 15-16)

भावार्थ है - जो देवों के देव के स्वामी तथा दुःख का विनाश करनेवाले हैं, उनको नमस्कार है। जो सर्वदेवमय तथा धाता हैं, जो सभी देवों द्वारा वरणीय हैं, जो सभी प्राणियों की बुद्धि हैं, जो सभी देवों के गुरु हैं, जो सभी भूतों के स्वामियों के स्वामी हैं, जिनकी मूर्तियों (अष्ट मूर्तियों) से समस्त जगत् व्याप्त है तथा इस जगत् में उनके सिवा कुछ भी अस्तित्व नहीं रखता, उन्हें प्रणाम है।

एक स्थल पर परशुराम के मुख से भगवान् शिव को - पार्वती को अर्द्धांग में धारण करनेवाले, जटा एवं गंगा से सुशोभित, देवदेव, महादेव जिनसे श्रेष्ठ अन्य कोई देव नहीं, जिनकी पूजा भक्तलोग करते रहते, वर देनेवाले, परमेश्वर, जगत् की उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार करनेवाले तथा जिनकी सर्वत्र प्रतिष्ठा है - इन सब विशेषताओं से युक्त कहलवाया गया है (विष्णुधर्मो. पु. प्रथमख. 52/3-7)।

त्वत्तः परतरं देवं नाऽन्यं पश्यामि कञ्चन।
पूजयन्ति सदा लिंगं तव देवाः सवासवाः।।
जगतोऽस्य समुत्पत्तिस्थितिसंहारपालने।
त्वामेकं कारणं मन्ये त्वयि सर्वं प्रतिष्ठितम्।। (विष्णुधर्मो. पु. प्र. ख. 52/5, 7)

भावार्थ यह है - (परशुराम जी कह रहे हैं), आपसे (शिव से) श्रेष्ठतर किसी अन्य देवता को मैं नहीं देखता। आपके लिंग की सभी देवता पूजा किया करते हैं। इस जगत् की उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार के एकमात्र कारण आप ही माने जाते हैं तथा आप में ही सभी कुछ प्रतिष्ठित (अवस्थित) है।

इन्द्र की प्रार्थना पर देवताओं द्वारा अबध्य नरवध्यासुर को पाताल में जाकर मारने के लिये भगवान् शिव परशुराम को आदेश देते हैं। वे कहते हैं कि मेरे पास वैष्णव धनुष पड़ा है। इस दिव्य धनुष तथा अक्षय तरकस को लेकर युद्ध में जाओ। नरवध्यासुर को मारने के बाद इस बैष्णव धनुष तथा अक्षय तरकस को अगस्त्यजी के पास रख देना ताकि वे उसे दशरथ पुत्र राम को दे सकें। भगवान् शिव परशुराम से पुनः कहते हैं कि यह धनुष वैष्णव तेज से युक्त है। भगवान् शिव के इस प्रकार कहने पर परशुरामजी उनसे पूछते हैं कि आपके पास यह वैष्णव धनुष कहाँ से आया? उनके इस

प्रकार प्रश्न करने पर भगवान् शिव उस धनुष की कहानी सुनाते हैं। यहाँपर हम उस कहानी को न बता कर उसके उसी अंश का उल्लेख करेंगे जो शिव के स्वरूप पर प्रकाश डालता हो।

एक बार वैष्णवी माया से मोहित हो देवता तथा ऋषिलोग ब्रह्माजी के पास जाकर विष्णु एवं महादेव के अन्तर को जानना चाहा। अर्थात् इनमें से कौन श्रेष्ठ है। इनकी श्रेष्ठता को लेकर देवताओं तथा ऋषियों में युद्ध की नौबत आ गयी। भृगु माया से मोहित हो विष्णु को श्रेष्ठ ठहराने लगे। इसका फैसला करने के लिये ब्रह्माजी ने यह तय किया कि शिव के धनुष को विष्णु तथा विष्णु के धनुष को शिव चढ़ायें। इनमें से जो जिसको चढ़ा देगा वह श्रेष्ठ माना जायगा। भगवान् विष्णु ने मेरे हाथ से मेरा धनुष ले लिया परन्तु प्रयास करने पर भी वे उसे नहीं चढ़ा सके। तब मोह के भंग होनेपर मुझे महेश्वर जानकर तथा मेरे धनुष को विशिष्ट जानकर मेरी स्तुति करने लगे। अपनी स्तुति में विष्णुजी ने शिव को देवश्रेष्ठ, अप्रमेय, सर्वगुणसम्पन्न, देवगणों द्वारा अर्चित, जिनका उन्मेष ब्रह्मा का एक दिन है तथा निमेष रात्रि, आदि, मध्य एवं अंत से रहित, एक, ईश, पुराणपुरुष, संपूर्ण भूतों में स्थित, भूतनाथ, चिद्रूप आत्मा, देवों के देव, त्रिगुणरूप, पुरुष, जिसकी इच्छा से त्रिलोकी स्थित है तथा जिसकी इच्छा से इसका विनाश होता है कहा है। वहीं पर वे आगे कहते हैं कि वे ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव तीन मूर्तियों का आश्रय लेकर उत्पत्ति, स्थिति एवं प्रलयरूपी तीन कार्यों को करते हैं, वे कारणों के कारण, सभी देवों द्वारा पूज्य एवं सर्वेश्वर आदि हैं(विष्णुधर्मो. पु. प्र. ख. 67/17-29)। स्तुति के कुछ अंशों को देखें-

नमोऽस्तु ते देववराप्रमेय नमोऽस्तु ते सर्वगुणान्तराय।
नमोऽस्तु ते देवगणार्चिताय नमोऽस्तु ते सर्वगुणोत्तराय।।
आद्यं न मध्यं न तथैव चान्तं त्वमेक ईशः पुरुषः पुराणः।।
उत्पत्तिनाशौ परिपालनं च कालत्रये शङ्कर देवकार्यात्।।

भावार्थ है-अप्रमेय देवश्रेष्ठ को नमस्कार, सभी गुणों में व्याप्य को नमस्कार, देवगणों द्वारा अर्चित देव को नमस्कार, सभी गुणों से परे को नमस्कार। आदि, अन्त और मध्य से रहित पुराणपुरुष तुम एक ईश को नमस्कार। भगवान् शंकर के कार्य उत्पत्ति, विनाश, पालन एवं काल हैं(वि. ध. पु. प्र. ख. 67/ 17, 19, 27)।

अनेक स्थलों पर शिव के सगुण रूपों की झलक मिलती है। सभी पुराणों में शिव की स्वीकृत सभी विशेषताएँ मिलती हैं-जैसे मृगछाला, पिनाक, त्रिशूल तथा नागों के आभूषण धारण करनेवाले, भस्मधारी, श्मशानवासी, नीलकंठ, गंगा तथा जटा-जूटधारी इत्यादि। इस पुराण में भी ये सभी विशेषण शिव से जुड़े हुए हैं।

उपरोक्त वर्णनों से शिव का परमतत्त्व होना स्पष्ट हो जाता है। वे निर्गुण एवं सगुण दोनों रूपों

को धारण करते हैं। त्रिदेवों के रूप को धारणकर सृष्टि, पालन तथा संहार का कार्य करते हैं।

शिवोपासना

भगवान् शिव को दुःख दूर करनेवाला(1/28/6), भक्तानुकम्पी(1/235/36), वरेण्य, (1/28/11) तथा वरदाता(1/28/4; 1/52/6 आदि) कहा गया है। उनके लिंग की उपासना से व्यक्ति पापों से छूट जाता है तथा उनके स्मरणमात्र से परमगति की प्राप्ति होती है।

तव लिङ्गार्चनरताः पूयन्ते सर्वकिल्बिषैः।।

स्मरन्ति ये त्वां सततं ते हि यान्ति परां गतिम्। (वि. ध. पु. 1/28/9-10)

भगवान् शिव को सर्वदेवमय बताया गया है(1/28/11)। उन्हें सभी देवताओं का गुरु भी बताया गया है(1/28/12)। उनके लिंग की पूजा देवगण सदा करते रहते हैं(1/52/5) तथा ऋषिगण उनका ध्यान, स्तुति तथा पूजन भक्तिपूर्वक करते रहते हैं(1/52/6)। रुद्र के जप से सभी पापों का नाश हो जाता है(2/125/45)।

उपरोक्त विशेषताओं से युक्त होने के कारण भगवान् शिव सबके उपास्य और पूज्य सिद्ध होते हैं। उनकी उपासना से दुःख दूर होते, पापों से मुक्ति मिलती, मोक्ष की प्राप्ति होती तथा मनचाहा वरदान मिलता है। चूँकि भगवान् शिव को सर्वदेवमय कहा गया है इसलिये उनके पूजन से सभी देवाताओं की पूजा सम्पन्न हो जाती है। देवताओं में वरणीय एवं उनके गुरु होने के नाते भी वे सबके पूज्य सिद्ध होते हैं।

भगवान् शिव की उपासना से भगीरथ गंगा को धरती पर ले आये(1/19/8-9 इत्यादि), परशुराम को दुष्ट राक्षस एवं क्षत्रियों से निपटने के लिये दिव्य परशु एवं अन्य अस्त्र-शस्त्रों की प्राप्ति हुई(1/49/23-26 तथा 1/50/1-6), राजा श्वेत ने मृत्यु को जीत लिया(1/अध्याय 236/16-20) तथा दक्ष को भी(जो शिव का विरोधी था) भगवान् शिव से वर की प्राप्ति हुई थी (1/235/35)।

भगवान् शिव की सगुण पूजा मुख्यतः लिंगपूजा ही होती है। हम ऊपर देख चुके हैं कि उनका लिंग सभी देवों द्वारा पूजा जाता है। राजा श्वेत ने लिंगपूजा के बलपर ही मृत्यु को जीतकर गणेश्वर का पद पाया था(**श्वेते तु शरणं प्राप्ते लिङ्गस्य त्रिपुरान्तकः** ...... 1/236/16-18)। एक स्थलपर कहा गया है कि लिंगपूजा से समस्त जगत् की पूजा हो जाती है। अर्थात् सभी देवों सहित चराचर की पूजा हो जाती है क्योंकि लिंग भी भगवान् शिव की भाँति सर्वदेवमय तथा सर्वस्वरूप है।

लिङ्गे हि पूजिते पूजा कृता तु जगतो भवेत्। (वि. धर्मो. पु. 3/74/2)

इस पुराण में कहा गया है कि रुद्र को नमस्कार करने से अथवा 'रुद्राध्याय' के पाठ से सभी प्रकार के उपद्रवों का शमन, महापातको का विनाश तथा शान्ति की प्राप्ति होती है।

नमस्ते रुद्र इत्येतत्सर्वोपद्रवनाशनम्।।

सर्वशान्तिकरं प्रोक्तं महापातकनाशनम्। (वि. ध. पु. 2/125/96-97)

इस पुराण में लिंगनिर्माण तथा शिव के चित्र बनाने संबन्धी भी दिशा निर्देश दिये गये हैं। महादेव के चित्रनिर्माणविधि में कहा गया है कि वृषपर आरूढ़ पंचमुखों से युक्त चित्र बनाना चाहिये। दक्षिणवाले मुख के अतिरिक्त सभी मुखों की बनावट सौम्य हो। दक्षिणमुख की बनावट विकट हो तथा उसमें मुण्डमाला हो। उत्तरमुख के अलावा सभी मुखों में तीन नेत्र हों। जटा के ऊपर चन्द्रकला हो। पाँचवा मुख जटा के ऊपर बनाना चाहिये। उन्हें वासुकी नाग का यज्ञोपवीत पहने, दस बाँहु, अक्षमाला, त्रिशूल, शरदण्ड, और कमल लिये हुए बनाना चाहिये। दाहिने हाथ में महासर्प तथा बाये में कमण्डलु बनाना चाहिये। इसी तरह हमें उनके वर्ण तथा पाँचों मुखों का विस्तार से वर्णन प्राप्त होता है जिसके अनुसार चित्र बनाना चाहिये(वि. धर्मो. पु. 3/44/14-20)। इसी प्रकार शिव की पंचमुखी मूर्त्तिनिर्माण संबंधी निर्देश भी विस्तार से प्राप्त होता है(वि. ध. पु. 3/अध्याय 48)

इस पुराण में कहा गया है कि रविवार को "सर्व, शर्व, शिव, स्थाणु, भूतानां निधि: तथा अव्यय"-इन नामों का क्रम से स्मरण करने से व्यक्ति पापों से छूट जाता है(3/124/6)। इसी प्रकार हर चौराहों पर शिव का नाम लेने से भी व्यक्ति पापों से छूट जाता है(3/125/22)। अष्टमी एवं चतुर्दशीव्रत की भी चर्चा इस पुराण में की गयी है। इन व्रतों में उपवास तथा लिंगपूजा प्रमुख बातें हैं। अष्टमीव्रत की शुरुआत शुक्ल पक्ष से करे। उस दिन कमल से लिंगपूजा करे तथा दोनों पक्ष की अष्टमी को व्रत करे। इस व्रत को करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है तथा अन्त में शिव-सायुज्य की भी(3/173/1-7)।

चतुर्दशीव्रत की शुरुआत फाल्गुन के शुक्लपक्ष से करे। 12 महीनों के दोनों पक्षों में चतुर्दशी को उपवासपूर्वक व्रत रहकर शिव की पूजा करनेवाला सभी कामनाएँ पूर्णकर अपने कुल को भी तारते हुए स्वयं शिवसायुज्य को प्राप्त कर लेता है(3/188/1-5)।

त्रिदेवों की एकता

तीनों प्रमुख देव(ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव) मूलत: एक ही हैं, एक ही तत्त्व के त्रिविध रूप हैं। इस पुराण में इस बात को स्पष्ट करते हुए एक स्थल पर कहा गया है कि निर्गुण तत्त्व जिसके सर्वत्र हाथ, पैर, आँख, शिर एवं मुख हैं, जो परमेश्वर तथा अविनाशी है, जिसके शरीर में ही समस्त विश्व है, को कोई सदाशिव, कोई जगत्पति तो कोई वासुदेव तो कोई काल तो कोई पुरुष तथा कोई प्रणव कहता है। बिना भक्ति के बुद्धिमान लोग भी इस तथ्य को(अर्थात् परमतत्त्व के स्वरूप को) ग्रहण नहीं कर सकते(1/171/10-16)। इस उद्धरण में परोक्षरूप से यह बताया गया है कि एक ही तत्त्व के नाना नाम तथा रूप कल्पित किये गये हैं। सभी रूप और सभी नाम उस एक ही तत्त्व के हैं।

एक अन्य स्थल पर विष्णुजी सभी देवों के समक्ष कह रहे हैं कि- "जो मैं हूँ वही

परमेश्वर (शिव) हैं, जो मैं हूँ वही पितामह (ब्रह्माजी) हैं। भगवान् शिव इन तीनों मूर्तियों के आश्रय से तीन प्रकार के कार्य साधते हैं। उत्पत्ति, विनाश तथा पालन तथा तीनों काल भगवान् शंकर के कार्य हैं।

योऽहं स देवः परमेश्वरस्त्वं योऽहं स देवः प्रपितामहश्च॥
आश्रित्य मूर्तित्रितयं मयेदं कर्मत्रयं शङ्कर साध्यते वै।
उत्पत्तिनाशौ परिपालनं च कालत्रये शङ्कर देवकार्यात्॥

(वि. धर्मो. पु. 1/67/26-27)

उपसंहार

नारद पुराण के अनुसार यह पुराण विष्णु पुराण का उत्तर भाग है जिसमें वराह कल्प की कथाएँ हैं। इसके प्राप्य श्लोकों की संख्या लगभग 9000 है। इस पुराण में भगवान् शिवसम्बन्धी सन्दर्भों का बड़ा ही संक्षिप्त वर्णन आता है, इस कारण से शिव के गौरव का विस्तारपूर्वक वर्णन हम नहीं पाते। इस संक्षिप्त वर्णन का कारण इस पुराण का वैष्णव होना है जिसका लक्ष्य भगवान् विष्णु के चरित्र को उभारना है। ऐसा होनेपर भी जो उद्धरण हमें शिवसम्बन्धी प्राप्त होते हैं उनसे भगवान् शिव परमतत्त्व सिद्ध होते हैं। उनके निर्गुण एवं सगुण दोनों रूपों की झलक मिलती है। निर्गुणरूप में उन्हें अविनाशी, अगम्य, बुद्धि से परे तथा ॐकारस्वरूप कहा गया है। सगुणरूप में सृष्टि, प्रलय तथा रक्षा का कार्य करने हेतु वे ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु तथा काल के रूप में विभक्त हो नाना रूप धारण करते हैं। वे समस्त प्राणियों के आत्मा, चराचर-जगत् के स्वामी, पाँच मुख तथा दस भुजाओंवाले, पार्वती को अर्द्धांग में धारण करनेवाले, धर्मरूपधारी वृषभ पर सवारी करनेवाले, जगत्स्वरूप, जटा, गंगा, चन्द्रमा, मृगचर्म, पिनाक, त्रिशूल, सर्पाभूषण आदि को धारण करनेवाले, भक्तवत्सल, वरदाता, योगियों द्वारा ध्येय, सुरासुर द्वारा पूज्य तथा सर्वेश्वर हैं।

भगवान् शिव की उपासना से स्वर्ग, मोक्ष अथवा परमगति तथा इच्छित वरदान प्राप्त होता है तथा पाप क्षय होकर व्यक्ति को अच्छे जन्म की प्राप्ति होती है। भगवान् शिव भक्तवत्सल तथा सर्वदेवमय हैं अतः उनकी उपासना करनी चाहिये। पुनः उनका वाहन धर्म है अतः धर्म पर जिसका शासन है उसकी भक्ति अवश्य करनी चाहिये।

भगवान शिव की सगुणपूजा मुख्यतः लिंग की पूजा है। उनके लिंग की पूजा सभी देवगण करते हैं। राजा श्वेत ने लिंगपूजा करके मृत्यु को भी पराजित कर दिया था। लिंग की पूजा करने से सभी देवों की पूजा हो जाती है (क्योंकि लिंग में सभी देव प्रतिष्ठित होते हैं)। शिव के व्रतों में अष्टमी तथा चतुर्दशी प्रमुख हैं जिनमें शिवलिंग की उपासना करने से व्यक्ति को स्वर्ग तथा शिवसायुज्य की प्राप्ति होती है। रविवार को तथा हर चौराहों पर शिव का नाम लेने से व्यक्ति पापमुक्त हो जाता है।

(यह लेख नाग पब्लिशर्स, दिल्ली द्वारा 1985 में प्रकाशित 'श्रीविष्णुधर्मोत्तरपुराणम्' की प्रति पर आधारित है।)

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ